प्रलीनभूपालमपि स्थिरायति प्रशासदावारिधि मण्डलं भुवः।

स चिन्तयत्येव भियस्त्वदेष्यतीरहो दुरन्ता बलवद्विरोधिता ॥२३॥

अन्वय–

प्रलीनभूपालम् स्थिरायतिः भुवः मण्डलम् आवारिधि प्रशासत् अपि सः त्वत् एष्यतीः भियः चिन्तयति एव। अहो बलवद्विरोधिता दुरन्ता ।।२३।।

अर्थ-

वह दुर्योधन (शत्रु) राजाओं के विनष्ट हो जाने के कारण सुस्थिर भूमण्डल पर समुद्रपर्यंत राज्य शासन करते हुए भी आप की ओर से आनेवाली विपदा के भय से चिन्तित ही रहता है। क्यो न ऐसा हो, बलवान् के साथ का वैर-विरोध अमङ्गलकारी ही है ॥२३॥

टिप्पणी-

समुद्रपर्यन्त भूमण्डल का शत्रुहीन राजा भी अपने विरोधी से भयभीत है। यहाँ अर्थान्तरन्यास अलङ्कार है।

कथाप्रसंगेन जनैरुदाहृतादनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः।

तवाभिधानाद् व्यथते नताननः स दु.सहान्मन्त्रपदादिवोरगः ॥२४॥

अन्वय-

कथाप्रसंगेन जनैः उदाहृतात् दु.सहात् तवाभिधानात् अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः सः मन्त्रपदात् अनुस्मृताखण्डलसूनुविक्रमः उरगः इव नताननः (सन्) व्यथते ॥२४॥

अर्थ-

बातचीत के प्रसङ्ग मे लोगों द्वारा लिए जानेवाले आप के नाम से इन्द्रपुत्र अर्जुन के भयङ्कर पराक्रम को स्मरण करता हुआ वह दुर्योधन (विष की औषधि करने वाले मंत्रवेत्ता द्वारा उच्चारित गरुड़ और वासुकि के नामों से युक्त) मंत्रों के प्रचंड पराक्रम को न सह सकने वाले सर्प की भांति नीचा मुख करके व्यथा का अनुभव करता है ॥२४॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि आप का नाम सुनते ही उसे गहरी पीड़ा होती है। अर्जुन के भयंकर पराक्रम का स्मरण करके वह मंत्रोच्चारण से संत्रस्त सर्प की भांति शिर नीचे कर लेता है। यहाँ उपमा अलंकार है।